REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन (असर प्रतिवेदन के विशेष सन्दर्भ में)

विजय कुमार यादव
सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर.

सारांश –

बालक की किसी भी भाषा या विषय में दक्षता का आधार उसकी प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करता है | हिंदी न केवल चयनित राज्य की भाषा है अपितु राजभाषा भी है | अब प्रश्न उठता है कि इन राज्यों में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा की क्या स्थिति है ? हिंदी शिक्षक की क्या स्थिति है ? वे अपने कर्तव्यो का पूर्ण निर्वहन कर रहे हैं या नहीं? अध्ययन के लिए चयनित राज्यों झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थीयों में हिंदी भाषा की क्या स्थिति है ? इसके अध्ययन के लिए असर रिपोर्ट से प्राप्त आंकडों को आधार मानकर अध्ययन किया गया है | असर (ASER-Annual Status of Education Report) भारत में 2005 से लगातार शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न राज्यों में ग्रामीण स्तर पर अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर रही है| असर रिपोर्ट समय के साथ-साथ बदलाव, इस नौ साल की आवधि के दौरान विभिन्न चरो में से प्रत्येक क्षेत्र के लिए चयनित संकेतकों में आए बदलाव का सारांश प्रदान करती है| असर बच्चों के पढ़ने की दक्षता का भी अध्ययन करती है | असर की पढ़ने की जाँच सामग्री में सबसे उच्चतम स्तर कक्षा II के स्तर के पाठ को पढ़ने की क्षमता है |असर की जांच एक "बुनियादी" जांच है| असर में ग्रेड-स्तर की जांच सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है| सबसे उच्चतम स्तर पर असर हमें यह बताता है की क्या बच्चा कम से कम कक्षा II के स्तर के पाठ को पढ़ सकता है या नही | पढ़ने की क्षमता की जाँच के लिए असर द्वारा चयनित दोनों राज्यों में हिंदी भाषा के पाठ को लिया गया है| अत: इस शोध प्रश्न पत्र में 2006 से 2014 तक के असर रिपोर्ट को आधार मानकर झारखण्ड एवं छतीसगढ़ राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है |

संकेत शब्द - असर (ASER), भाषा दक्षता, बुनियादी, प्राथमिक शिक्षा |

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की आधारशीला है | बालक में किसी भी भाषा या विषय का आधार बालक की प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करता है | प्राथमिक शिक्षा के अध्यापक , वातावरण का प्रभाव छात्रों पर पड़ता रहता है | जैसा अध्यापक और वातावरण का प्रभाव विद्यार्थी पर पड़ता है वैसा ही उसका विषय विकास होता है | अक्सर ऐसा देखा गया है कि बालक की रूचि उस विषय में ज्यादा होती है जिस विषय का कुशल अध्यापक बालक को मिला हो या उस विषय में होती है जिस विषय से संबंधित वातावरण उसे ज्यादा मिला हो | हिंदी भारत में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है| हिंदी चयनित राज्यों की भाषा ही नही अपितु राष्ट्रभाषा भी है | झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थीयों में हिंदी भाषा की स्थिति क्या है? हिंदी शिक्षक की स्थिति क्या है ? वे अपने कर्तव्यो का पूर्ण निर्वहन कर रहे हैं या नहीं ? निजी एवं सरकारी विद्यालयों में हिंदी भाषा की क्या स्थितिहै ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर संभवतः प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राप्त हो सकता है| इसके अध्ययन के लिए असर रिपोर्ट को आधार मानकर अध्ययन किया गया है | असर (ASER-Annual Status of Education Report) भारत में 2005 से लगातार शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न राज्यों में ग्रामीण स्तर पर अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर रही है|

2006 से 2014 तक प्रत्येक वर्ष असर ने भारत में प्रत्येक राज्य और लगभग प्रत्येक ग्रामीण जिलों से बच्चों के एक प्रतिनिधिक सैम्पल के लिए आंकड़े एकत्रित किए हैं |प्रत्येक वर्ष असर ने औसतन 560 से अधिक जिलों में पहुँचकर, देश भर के 16,000, से अधिक गाँवों में औसतन 650,000 बच्चों का सर्वेक्षण किया है | बच्चों के विद्यालय में नामांकन, बुनियादी पढ़ने और गणित हल करने की क्षमता की जानकारी प्रत्येक वर्ष ली गई | असर समय के साथ-साथ बदलाव, इस नौ साल की आवधि के दौरान इन चरो में से प्रत्येक क्षेत्र के लिए चयनित संकेतकों में आए बदलाव का सारांश प्रदान करती है|

असर हिंदी भाषा दक्षता के लिए कोई परिक्षण नही करती है परन्तु अध्ययन के लिए चयनित राज्यों में असर रिपोर्टमें पढ़ने की जाँच सामग्री के रूप में हिंदी भाषा को आधार माना गया है| असर की पढ़ने की जाँच सामग्री में सबसे उच्चतम स्तर कक्षा II के स्तर के पाठ को पढ़ने की क्षमता है |असर की जांच एक "बुनियादी" जांच है | असर में ग्रेड-स्तर की जांच सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है | सबसे उच्चतम स्तर पर असर हमें यह बताती है कि क्या बच्चा कम से कम कक्षा II के स्तर के पाठ को पढ़ सकता है या नहीं | इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि बच्चे हिंदी का पाठ पढ़ लेते है तो वो हिंदी भाषा में भी बेसिक स्तर पर दक्ष हैं अत: इसके आधार पर हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|

असर रिपोर्ट के आंकडों में वर्ष 2006 में कक्षा 3 के सम्पूर्ण भारत के 48.1%,झारखण्ड के 50.2 एवं वही छत्तीसगढ़ के 36.2% विद्यार्थी कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते थे| वर्ष 2014 की रिपोर्ट में पाया गया की समूर्ण भारत के 40.3%, झारखण्ड के 29.8 एवं वही छत्तीसगढ़ के 38.7% विद्यार्थी कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ने में दक्ष थे | अर्थात असर रिपोर्ट से स्पष्ट हो रहा की सम्पूर्ण भारत में दिन-प्रतिदिन जहां भाषा दक्षता बढ़ना चाहिए वही घटा है| झारखण्ड में भी भाषा दक्षता का स्तर गिरा है | छत्तीसगढ़ में भाषा दक्षता का स्तर बढ़ा तो है पर जितना होना चाहिए उसकी अपेक्षा कुछ भी नही हो पाया| अत: असर रिपोर्ट से प्राप्त आँकडे और परिणाम इस ओर इंगित करते हैं कि भाषा शिक्षण के प्रति अध्यापक और सरकार के साथ-साथ अभिवावक को सतर्क होने की जरुरत है | अन्यथा विद्यार्थियों में भाषा विकास की मंजिल बिना आधारशिला के तैयार नही हो पायेगी|

अध्ययन का उद्देश्य :

1. छत्तीसगढ़ के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का अध्ययन करना|
2. झारखण्ड के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का अध्ययन करना|
3. छतीसगढ़ एवं झारखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

विधि : आँकड़ा विश्लेषण विधि

पढ़ने की जाँच सामग्री

कहानी -" रामपुर में एक मैदान था| वहाँ कुछ नही उगता था | वहाँ कोई खेलने नही जाता था | एक दिन कुछ लोग आए | उन्होंने गाँव के लोगों को बुलाया | सबने मिलकर तय किया कि यहाँ बगीचा बनाया जाए | खाद मंगाकर हर तरह के पौधे लगाए गए| सही समय पर पानी दिया गया | आज वहाँ एक सुंदर बगीचा है इसलिए वहाँ सभी खेलने जाते हैं|"

अनुच्छेद – रूपा बाहर खेल रही थी | खेलते–खेलते रात हो गई | रूपा अपने घर चली गई |
वह खाना खाकर सो गई |

अक्षर – द, क,ख,च,ल,ब,ह,थ,त,म,ख |

शब्द – नाक , तोता , कूड़ा , खुश , नैना , मौका, सेब, पीला ,झोला , दिन |

विभिन्न वर्षों के पढ़ने के स्तर

सारणी -1

कक्षा III में पढ़ने के स्तर 2006-2014

कक्षा 3 के उन बच्चों का % जो कम से कम कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं|

वर्ष	झारखण्ड	छत्तीसगढ़
2006	50.2	36.2
2007	42.5	31.0
2008	41.0	69.6
2009	37.4	52.5
2010	38.9	44.6
2011	30.6	29.9
2012	31.1	37.6
2013	30.9	34.0
2014	29.8	38.7

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 2006 एवं 2007 में झारखण्ड के विद्यार्थियों का प्रतिशत स्तर छत्तीसगढ़ के विद्यार्थीयों से ज्यादा है | अर्थात 2006-2007 में झारखण्ड के विद्यार्थीयों का पठन स्तर छतीसगढ़ के विद्यार्थीयों के तुलना में उच्च है| 2008-2014 तक छत्तीसगढ़ के विद्यार्थीयों का प्रतिशत स्तर झारखण्ड के विद्यार्थीयों से उच्च है | इन दोनों तथ्यों को ध्यान दिया जाय तो शुरु के दो वर्षो को छोड़कर बाकि 2008 से 2014 तक के आंकडों से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के कक्षा3 के बच्चों का % जो कम से कम कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं झारखण्ड की तुलना में आधिक है अर्थात उनका पठन स्तर झारखण्ड के छात्रो की तुलना में उच्चै हैछतीसगढ़ के बच्चों के पढ़ने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई है जबकि झारखण्ड के बच्चों में कमी हुई है|

सारणी- 2

कक्षा 5 के उन बच्चों का % जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं|

वर्ष	झारखण्ड	छत्तीसगढ़
2006	60.1	53.9
2007	58.3	58.0
2008	54.8	74.8
2009	48.1	64.8
2010	49.6	61.6
2011	41.0	43.7
2012	37.7	45.2
2013	33.9	49.8
2014	34.4	52.4

उपर्युक्त सारणी में कक्षा 5 के उन बच्चों का % दर्शाया गया है जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं| इस सारणी से स्पष्ट होता है कि 2006 को छोड़कर बाकि के वर्षो 2007 से 2014 में छतीसगढ़ के बच्चों का पठन स्तर प्रतिशत झारखण्ड की तुलना में अधिक है| छतीसगढ़ के बच्चों में पठन दक्षता का उन्नयन हुआ है जबकि झारखण्ड के छात्रों में गिरावट पायी गई है|

सारणी -1 और सारणी -2 के आधार पर हम देख सकते हैं कि बढ़ती कक्षाओं के साथ ऐसे बच्चों का अनुपात बढ़ता है जोकक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं|

समय के साथ बदलाव

सारणी - 3

कक्षा V के उन बच्चों का % जो पढ़ने के विभिन्न स्तर पर हैं	विद्यालय प्रकार के अनुसार 2010-2014					
वर्ष	झारखण्ड के कक्षा V के उन बच्चों का % जो कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं|		छत्तीसगढ़ के कक्षा V के उन बच्चों का % जो कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं|		
	सरकारी	निजी	सरकारी और निजी	सरकारी	निजी	सरकारी और निजी
2010	48.4	65.8	49.6	61.0	69.0	61.6
2011	37.5	68.2	41.0	42.6	56.6	43.7
2012	32.5	75.4	37.7	44.0	64.2	46.2
2013	29.4	67.9	33.9	45.5	80.3	49.8
2014	29.1	64.0	34.4	47.1	76.6	52.4

उपर्युक्त सारणी के अनुसार यह स्पष्ट हो रहा है कि दोनों राज्यों के सरकारी, निजी एवं सरकारी और निजी विद्यालयो के बच्चों के पढ़ने के स्तर में काफी अंतर है| सरकारी विद्यालयों के बच्चों के अपेक्षा निजी विद्यालयों के बच्चे पढ़ने में ज्यादा सक्षम है अर्थात उनमे हिंदी भाषा दक्षता अधिक है |

झारखण्ड राज्य के सरकारी विद्यालयों के कक्षा V के बच्चों के % की तुलना में छत्तीसगढ़ राज्य के सरकारी विद्यालयों के बच्चों का % अधिक हैं,जो कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं| अर्थात झारखण्ड के कक्षा V के बच्चों की तुलना में छत्तीसगढ़ के कक्षा V के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता अधिक है|

सारणी के अनुसार वर्ष 2010 से 2014 तक के आंकडों को देखें तो दोनों राज्यों के सरकारी विद्यालयोंके उन बच्चों का प्रतिशत जो कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, क्रमश: घटता जा रहा है जबकि आधुनिक तकनीकी युग में इसे बढ़ना चाहिए| झारखण्ड के निजी विद्यालयों के बच्चों का प्रतिशत अनुपात लगभग यथावत रहा है परन्तु छत्तीसगढ़ के निजी विद्यालयों के बच्चों का प्रतिशत बढ़ा है |

अत: यहाँ स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित हो रहा है कि छत्तीसगढ़ के सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों के बच्चें जो कक्षा II स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं उनका प्रतिशत झारखण्ड राज्य के तुलना में अधिक है| अर्थात छत्तीसगढ़ के सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों के बच्चों में झारखण्ड राज्य के सरकारी और निजी विद्यालयों के बच्चों की तुलना में हिंदी भाषा दक्षता अधिक है|

सारणी – 4

कक्षा V के बच्चों के पढ़ने के विभिन्न स्तर के अनुसार बच्चों का % सभी विद्यालय 2014						
राज्य	अक्षर भी नही पढ़ सकते	अक्षर	शब्द	स्तर 1 (कक्षा I स्तर का पाठ	स्तर 2 (कक्षा II स्तर का पाठ	कुल
झारखण्ड	4.7	14.0	20.4	26.5	34.4	100
छत्तीसगढ़	4.5	13.7	12.4	17.0	52.4	100

असर रिपोर्ट 2014 में झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के सभी विद्यालयों के कक्षा V के बच्चों के पढ़ने के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त आंकडों के आधार पर उपर्युक्त सारणी-4 का निर्माण किया गया है |इस तालिका में पढ़ने के 5 स्तर का उल्लेख है,जिसके आधार पर असर रिपोर्ट बच्चों के पढ़ने के दक्षता की जांच की है| असर द्वारा सबसे निम्न स्तर अक्षर न पढ़ पाने वाले बच्चों का है | सबसे उच्च स्तर कक्षा II स्तर का पाठ पढ़ने वाले बच्चों का है | उपर्युक्त तालिका में झारखण्ड के कक्षा V के 4.7 % बच्चें अक्षर भी नही पढ़ सकते अर्थात 4.7 %

बच्चों का स्तर निम्न एवं 34.4 % बच्चों का स्तर उच्च है | छत्तीसगढ़ के 4.5 % बच्चें पाठ पढ़ने में सक्षम नही हैं और52.4 % बच्चों का पढ़ने का स्तर उच्च है | अत: सारणी 4 से स्पष्ट हो रहा है कि छतीसगढ़ के कक्षा V के बच्चों में झारखण्ड के बच्चों से हिंदी भाषा दक्षता अधिक है |

निष्कर्ष

1 . छत्तीसगढ़ राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा की दक्षता झारखण्ड राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों से अधिक है |

2 . छतीसगढ़ राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता में विकास की स्थिति समय के अनुसारसुधार की दिशा में है|

3 . झारखण्ड राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता के विकास की स्थिति अति दयनीय है इसमें विकास की दिशा उच्च न होकर निम्न की तरफ है |

4 . छत्तीसगढ़ राज्य के सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता अधिक है| सरकारी विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा के पाठ पढ़ने का स्तर वर्ष2010 से 2014 तक लगभग यथावत रहा है जबकि निजी प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों का स्तर लगातार बढ़ा है |

5. झारखण्ड राज्य के सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा दक्षता अधिक है| सरकारी विद्यालयों के बच्चों में हिंदी भाषा के पाठ पढ़ने का% वर्ष 2010 से 2014 तक घटता हुआ पाया गया है जबकि निजी प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में स्तर लगभग यथावत रहा है |

सुझाव

झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों के सरकारी विद्यालयों में सुधार की आवश्यकता है| सरकारी विद्यालयों के बच्चों का स्तर निजी विद्यालयों से काफी निम्न है यह एक चिंता का विषय है| दिन-प्रतिदिन बच्चों की हिंदी भाषा दक्षता में सुधार होने के वजाय स्तर गिरता हुआ भी पाया गया है | इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए इस विषय पर शोध कार्य किये जाने चाहिए ताकि बेसिक समस्याओं का पता चल सके, जिसके कारण बालको में हिंदी भाषा दक्षता बढ़ने के वजाय घट रहा है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

ASER, 2006-2014, 'Annual Status of Education Report (Rural)' Pratham Resource Centre, available at, http://www.asercentre.org/ngo-education-india.php?p=Download+ASER+reports.

Abbeduto, L., Brady, N. & Kover, S. (2007). Language development and Fragile X syndrome: Profiles, syndrome specificity and within syndrome differences. *Mental Retardation and Developmental Disabilities Research Reviews,* 13, 36-46.

Abdul Latif Jameel Poverty Action Lab [J-PAL], Pratham, & ASER, (2009). Evaluating READ INDIA: the development of tools for assessing Hindi reading and writing ability and math skills of rural Indian children in grades 1-5. Unpublished manuscript: J-PAL, Chennai, India.

Akhtar, N., Dunham, F., & Dunham, P.J. (1991). Directive interactions and early vocabulary development: The role of attentional focus. *Journal of Child Language,* 18, 41-49

Andrabi, Das, Khwaja, Farooqi, & Zajonc. (2002). Test feasibility survey Pakistan: Education Sector. Cohen, J. (1960). A coefficient of agreement for nominal scales. Educational and Psychological Measurement, 20, 37-46.

Bailey, A. L. & Heritage, M. (2008). *Formative assessment for literacy, Grades K-6: Building reading and academic language skills across the curriculum.* Thousand Oaks, CA: Corwin/Sage Press.

Foulin, J.N. (2005). Why is letter-name knowledge such a good predictor of learning to read? Reading and Writing, 18, 129-155.

LaBerge, F., & Samuels, S.J. (1974). Toward a theory of automatic information processing in reading. Cognitive Psychology, 6, 293-323.

Perfetti, C.A. (1985). Reading ability. London: Oxford.

Pratham (2006). Annual Status of Education Report (ASER). Retrieved July 1, 2009 from the World Wide Web: http://asercentre.org/asersurvey/aser06.php

Pratham (2007). Annual Status of Education Report (ASER). Retrieved July 1, 2009 from the World Wide Web: http://asercentre.org/asersurvey/aser07.php

Pratham (2008). Annual Status of Education Report (ASER). Retrieved July 1, 2009 from the World Wide Web: http://asercentre.org/asersurvey/aser08/pdfdata/aser08.pdf

USAID (2009). Early grade reading assessment (EGRA). Retrieved July 1, 2009 from the WorldWideWeb:http://www.eddataglobal.org/documents/index.cfm?fuseaction=pubDetail&ID=95

University of Oregon Center on Teaching and Learning. (2002). Dynamic indicators of basic early literacy skills [DIBELS]: Analysis of reading assessment measures. Retrieved February 1, 2008 from the World Wide Web: http://dibels.uoregon.edu/techreports/dibels_5th_ed.pdf

Wolf, M., & Katzir-Cohen, T. (2001). Reading fluency and its intervention. Scientific Studies of Reading, 5(3), 211-239.